सुप्रभात बच्चों, कल हमने पहला पाठ समाप्त कर लिया उम्मीद है आपको भली भांति समझ आ गया होगा। आज हम नया पाठ जिसका शीर्षक है गुरु नानक के बारे में अध्ययन करेंगे।

गुरु नानक

समय-समय पर हमारे देश में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ है। उन्होंने भाईचारे और एकता का संदेश दिया। ऐसे ही एक महापुरुष गुरु नानक थे। वे सिक्खों के प्रथम गुरु थे। गुरु नानक का जन्म सन् 1468 ई0 में कार्तिक पूर्णिमा को तलवंडी नामक गाँव में हुआ था। यह स्थान अब पाकिस्तान में है। इस स्थान को ननकाना साहब कहते हैं। उनके पिता का नाम कालूचंद पटवारी और माता का नाम तृप्ता देवी था। नानक की एक बड़ी बहन भी थी। उसका नाम नानकी था। आठ वर्ष की आयु में नानक को पढ़ने के लिए पाठशाला भेजा गया। लेकिन उनका मन पढ़ने में नहीं लगता था। वे सदा ईश्वर के संबंध में सोचा

करते थे। घर पर उनको खर्च के लिए जो कुछ पैसे मिलते थे, उन्हें वे गरीबों में बाँट देते थे। पिता ने देखा कि बालक का मन पढ़ने में नहीं लगता, तो उन्होंने एक दिन अपने पुत्र को चालीस रुपये देकर लाहौर भेजा। उन्होंने नानक से कहा-"बेटा! इन रुपयों से व्यापार करके, कुछ कमा लाओनानक लाहौर की ओर बढ़ने लगे। मार्ग में उन्होंने साधुओं की एक टोली देखी। उन्हें मालूम हुआ कि साधु तीन दिन से भूखे हैं। उनका हृदय पिघल गया। उन्होंने तुरंत सारे रुपये साधुओं को भोजन कराने में खर्च कर दिए। इसके बाद वे खाली हाथ घर लौट आए। पिता को पुत्र के इस कार्य से बहुत दुख हुआ। उन्होंने नानक को बहुत डॉटा, पर उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

गृहकार्य

इस कहानी को पढ़े और समझें। शेष भाग अगली कक्षा में।